[This question paper contains 4 printed pages.]

5820 *आपका अनुक्रमांक* .....

B.A. (Programme)/I **E**

HINDI DISCIPLINE—Paper I

हिंदी अनुशासन-प्रश्न-पत्र I

(हिंदी कविता, नाटक तथा हिंदी कविता का प्रवृत्तिगत इतिहास)

(प्रवेश वर्ष 2004/2006 और तत्पश्चात् नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए/NCWEB के विद्यार्थियों के लिये)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 75*

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

टिप्पणी : *प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक नियमित कॉलेजों (श्रेणी 'A') के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं। तथापि ये अंक NCWEB के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में अधिक होंगे।*

1. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) पाछैं लागा जाइ था, लोक बेद के साथि।
पैंडे में सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि।।

P.T.O.

कबीर सतगुर नां मिल्या, रही अधूरी सीष।
स्वांग जती का पहिरि करि, घरि घरि मांगै भीष।।

(ख) अब लौं नसानी, अब ना नसैहों।
राम-कृपा भव-निसा सिरानी, जागे पुनि न डसैहों।।
पायो नाम चारु चिंतामनि, उर कर ते न खसैहों।
स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसैहों।।
परबस जानि हँस्यो इन इंदिन, निज बस है न हँसैहों।
मन मधुकर पन कै तुलसी, रघुपति-पद-कमल बसैहौं।।

(ग) अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है;
न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है।
इस तत्त्व पर ही कौरवों से पाण्डवों का रण हुआ,
जो भव्य भारतवर्ष के कल्पांत का कारण हुआ।।
सब लोग हिल मिलकर चलो, पारस्परिक ईर्ष्या तजो,
भारत न दुर्दिन देखता, मचता महाभारत न जो।। (8+8)

2. बिहारी अथवा जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय लिखिए। (7)

3. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) बिहारी के दोहों का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।
(ii) नागार्जुन की काव्यानुभूति पर विचार कीजिए।
(iii) घनानंद के काव्य में अभिव्यक्त प्रेम के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
(iv) 'गीत फरोश' कविता में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए। (6+6)

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

कश्मीर में लोग समझते हैं कि मैंने संन्यास ले लिया है। परंतु मैंने संन्यास नहीं लिया। मैं केवल मातृगुप्त के कलेवर से मुक्त हुआ हूँ जिससे पुनः कालिदास के कलेवर में जी सकूँ। एक आकर्षण सदा मुझे उस सूत्र की ओर खींचता था जिसे तोड़कर मैं यहाँ से गया था। यहाँ की एक-एक वस्तु में आत्मीयता थी, वह यहाँ से जाकर मुझे कहीं नही मिली। मुझे यहाँ की एक-एक वस्तु के रूप और आकार का स्मरण है।

अथवा

मैं कब कहता हूँ कि दूसरा अर्थ नहीं है? अर्थ बहुत स्पष्ट है। वे यहाँ ही हर वस्तु को विचित्र के रूप में देखते हैं और उस वैचित्र को यहाँ से जाकर दूसरों को दिखाना चाहते हैं तुम, मैं, यह घर, ये पर्वत, सब उनके लिए विचित्र के उदाहरण हैं। मैं तो उनकी सूक्ष्म और समर्थ दृष्टि की प्रशंसा करता हूँ जहाँ वैचित्र्य नहीं, वहाँ भी वैचित्र्य देख लेती है। (8)

5. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए।

अथवा

कालिदास की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। (12)

6. (क) कृष्णकाव्यधारा अथवा द्विवेदी युग की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। (10)

(ख) किसी एक पर टिप्पणी लिखिए -

(i) निर्गुण भक्ति काव्य

(ii) भारतेंदुयुगीन कविता

(iii) छायावाद (10)